ATTITUDE

दृष्टिकोण

सिर्फ दृष्टिकोण ही आपको ऊँची कामयाबी दिलाता है

नकारात्मक दृष्टिकोण का आखिरी नतीजा... पृष्ठ 99

ऐसा कुछ मत करो... पृष्ठ 125

घटिया नजरिये वाले लोग क्या पैदाइशी घटिया... पृष्ठ 111

एक वो भी जमाना था सच्चाई का... पृष्ठ 130

उलट कर पढ़ने की जरूरत क्या है?... पृष्ठ 121

सकारात्मक दृष्टिकोण.... इंसान में फर्क... पृष्ठ 141

ATTITUDE

दृष्टिकोण

दृष्टिकोण ही इंसान को छोटा या बड़ा बनाता है।

—राम बजाज

पानी से आधे भरे किसी गिलास को देखकर आप क्या सोचते हैं?

(1) गिलास पानी से **आधा भरा** है।

अथवा

(2) गिलास **आधा खाली** है।

बस, यही उत्तर आपके जीवन एवं सोच की दिशा का प्रतिबिम्ब पेश कर देता है। इनमें से एक उत्तर सफलता की कहानी सुनायेगा और एक असफलता की कहानी बनायेगा।

यदि पहला जवाब ही आपका जवाब है तो आप सकारात्मक दृष्टिकोण (Positive Attitude) रखते हैं व आगे चलकर यही दृष्टिकोण कड़ी मेहनत और नैतिक मूल्यों के सहारे आपको आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचा देगा।

जबकि दूसरा जवाब अगर आपका हो सकता है तो शायद यह कोई ऐसी उल्टी कहानी बना दे जिसके सहारे आपको जमीन में घुसना पड़े। ऐसे सोच वाले व्यक्ति नकारात्मक दृष्टिकोण (Negative Attitude) वाले होते हैं।

जीवन में निराशा से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है।

—विवेकानन्द

What is Attitude ?

दृष्टिकोण है क्या?

मनुष्य स्वयं का भाग्य निर्माता है। रोज वह स्वयं के व्यवहार और विचार सम्पदा (पूंजी) का संचय (Collect) करता रहता है। कुछ-न-कुछ वह सीखता रहता है और उसमें जोड़ता रहता है। इसी में से व्यक्ति का सुख निकलता है, साहस, प्रेरणा, प्रेम, भय व घृणा भी इसी में से निकलते हैं। इसी के अनुरूप हम जीते हैं, काम करते हैं, परिश्रम करते हैं और अच्छे व बुरे नैतिक मूल्यों पर ध्यान देते हैं। इसी में मन के आवरणों के चढ़ने—उतरने की प्रक्रिया चलती है। जीने के साथ-साथ इस प्रक्रिया को भी देखते जावें, तो नए आवरण रोके भी जा सकते हैं और पुराने आवरणों को हटाने का अवसर भी मिलता है। इसी से दृष्टि का स्पष्टीकरण (Explanation) बना रहता है जिसे हम दृष्टिकोण (Attitude) कहते हैं।

मनुष्य का स्वभाव (Nature) होता है कि वह गलती का दोष सदा दूसरों पर डालने की चेष्टा करता है। इस प्रवृत्ति के सहारे स्वयं को अच्छा व दूसरों को बुरा बनाने का प्रयास भी करता है। इसी को नकारात्मक दृष्टि (Negative View) कहते हैं। फिर नाकामयाबी का सारा दोष माँ-बाप, पत्नी या किसी दोस्त पर डालने का प्रयास करता है। ये सारे बहाने नकारात्मक की परिभाषा (Definition) में आते हैं। हम में से हर एक को इस प्रकार के थोड़े-बहुत अनुभव होते ही रहते हैं।

सकारात्मक दृष्टिकोण का आधार (Basis) वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धान्त है। सकारात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति का आधार देश, समाज, परिवार व स्वयं की प्रेम और जुड़ाव की भावना पर आधारित है। जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण भय, अपरिपक्वता (immaturity) के कारण पैदा होता है।

व्यर्थ चिंता व बोझों से दबा शरीर ही
नकारात्मक सोच की ओर ले जाता है।

—संत रवि शंकर

*

यदि आप शारीरिक तौर पर स्वस्थ नहीं हैं
तो सकारात्मक दृष्टिकोण रख ही नहीं सकते।

—राम बजाज

*

निराशा संभव को असंभव बना देती है।

—जयशंकर प्रसाद

भगवान का दृष्टिकोण भी जीवन में उतारें

प्रभु ईसा मसीह एक गाँव में ठहरे हुए थे। गाँव के लोग एक औरत को पकड़ लाए और कहने लगे कि वह व्यभिचारिणी है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि व्यभिचारिणी स्त्री को पत्थरों से कुचल कर मार देना चाहिए। इसलिए हम इस औरत को पत्थरों से मार रहे हैं। यह कहते हुए गाँव के लोग उस औरत पर पत्थर फेंकने लगे। औरत प्रभु ईसा मसीह के सामने लाचार होकर नीचे जमीन पर गिर गई।

ईसा मसीह के सामने बड़ा पेचीदा मामला था। क्योंकि शास्त्रों में सचमुच ऐसा ही करने का निर्देश था तथा लोग शास्त्रों को मानते हुए उस औरत पर पत्थरों की वर्षा करके उसे मारने पर उतारू हो गए थे। फिर अगर ईसा कहते कि शास्त्र सही हैं—तो तुरन्त उस महिला को मार ही देते तथा साथ में गाँव वाले सवाल करते कि 'बुराई का भी प्रतिरोध न करना' जैसा उपदेश व नियम यहाँ लागू नहीं होता है क्या? क्या ईसा मसीह का दृष्टिकोण (Attitude) भी अलग है इस महिला के साथ?

ईसा मसीह ने कुछ पल के लिए सोचा और वहाँ खड़े लोगों को रुकने का निर्देश दिया।

उन्होंने कहा, 'गाँव वालो, शास्त्र व नियम पूरी तरह सही हैं। जो व्यभिचार करता है उसे पत्थरों से मार डालना चाहिए। परन्तु मेरे दृष्टिकोण से पत्थर मारने का अधिकार सिर्फ उसी को है—जिसने अपनी जिन्दगी में व्यभिचार नहीं किया हो तथा ना ही कभी व्यभिचार का विचार ही किया हो। इसलिए मेरा नजरिया (दृष्टिकोण) इस सम्बन्ध में यह है कि जो आदमी इस दृष्टिकोण में सही उतरे, उसे ही औरत को पत्थरों से मारने का अधिकार होगा, अन्यथा जो आदमी इस पैमाने पर खरा नहीं उतरता है, वो पत्थर से इस औरत को नहीं मार सकता।'

ईसा मसीह की बात सुनकर सब लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लग गए। हाथ में उठाए हुए पत्थर नीचे रखते हुए धीरे-धीरे भीड़ छँटने लगी। वहाँ से ईसा मसीह व उस औरत के अलावा सभी लोग अपने घर चले गए थे।

निष्पक्ष व न्यायपूर्ण दृष्टि से व्यक्ति का सम्पूर्ण चरित्र निर्माण-आधारित होता है। दृष्टिकोण (Attitude) का सकारात्मक अथवा नकारात्मक निर्माण, अकसर माहौल और परिस्थिति के अनुसार होता रहता है। आज व्यक्ति का चरित्र इसलिए विकृत होता है क्योंकि मानव समाज का दृष्टिकोण (Attitude) विकृत और नकारात्मक (Negative) हो गया है। अधिकतर ऐसा होता है कि आदर्श चरित्र, आदर्श कामनाओं व श्रेष्ठताओं को सम्पादित (Edited) करने के लिए जैसा मनोबल (Moral), आत्मबल चाहिए वैसा हर मनुष्य में होता नहीं है और वह अपना दृष्टिकोण (Attitude) नकारात्मक दिशा में निर्धारित कर देता है।

जीवन में आशा तथा निराशा धूप-छांव के समान होती हैं।

—इमर्सन

उत्तर और दक्षिण दृष्टिकोण
North & South Attitude

मनुष्य स्वयं अपने दृष्टिकोण (Attitude)
के जाल में फँस जाता है।

—राम बजाज

पुरातनकाल में ईश्वर ने एक मनुष्य को घड़कर एक सुन्दर नदी के पास उतरने का आदेश दिया जहाँ इस सुन्दर नदी के (दक्षिणी) तट पर सकारात्मक दृष्टिकोण (Positive Attitude) वाले व्यक्ति सभी 'सुखों' के साथ अपनी जिन्दगी बसर कर रहे थे। नदी के

दूसरे तट (उत्तर) पर नकारात्मक दृष्टिकोण (Negative Attitude) वाले लोगों का जमावड़ा था तथा वे 'पापों' के साथ जिन्दगी बिता रहे थे।

चूँकि भगवान द्वारा निर्मित यह मनुष्य—जब हुक्म के अनुसार इस अज्ञात स्थान पर उतरने के लिए तैयार खड़ा था, वहाँ उसको दोनों समूहों के लोग मिल गए। नदी के एक किनारे सकारात्मक दृष्टिकोण वाले खड़े थे तथा बड़ी प्रसन्न मुद्रा में दिख रहे थे। दूसरे तट पर नकारात्मक लोगों की भीड़ थी तथा उसमे प्रसन्नता की झलक देखने को नहीं मिली।

नदी के दोनों तटों पर, सकारात्मक व नकारात्मक लोगों को खड़ा देखकर दोनों से इस मनुष्य ने पूछा और कहा, 'मित्रो, आज मैं इस सुन्दर नदी की लहरों में खेलना चाहता हूँ तथा इस पृथ्वी पर नीचे उतरना चाहता हूँ। कहो, किस तट पर आऊँ?'

सकारात्मक लोगों ने इस नए मनुष्य से अपने तट पर आने का निवेदन किया और कहा कि यहाँ पृथ्वी के सारे सुख मौजूद हैं। आप, कृपया, इसी तट पर पधारने की कृपा करें। इस नए मनुष्य ने सकारात्मक विचार वाले लोगों की प्रसन्नचित्त मुद्रा में बात सुनकर उस तट (दक्षिण) की ओर पैर बढ़ाए ही थे कि नकारात्मक सोच वाले लोगों ने नए मनुष्य को कहा, 'मित्र! उधर नहीं, इधर आओ हमारे तट (उत्तर) पर। दक्षिणी तट तो सकारात्मक सोच व सुख की भूमि है जहाँ तुम्हें जीवन-भर हाथ कुछ नहीं लगेगा। उस भूमि पर स्वार्थ नहीं है—सभी लोग सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मित्र, ऐसे जीवन से भी क्या लाभ है जहाँ सुख के अलावा तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा?'

नए मनुष्य ने यह सोचकर अपना पैर पलटकर दूसरे तट (उत्तरी) की ओर बढ़ाया। यह देखकर सकारात्मक लोगों ने चीखकर कहा, 'मित्र क्या करते हो! मूर्खता मत करो। ज्ञान से हमें पहचानो। संसार में सिर्फ यही एक तट है जहाँ लोग साहस व ऊँचे मनोबल के साथ इस भूमि पर उतरते हैं। यहीं से हम लोग (सकारात्मक दृष्टिकोण) नए आने वाले लोगों को हाथ पकड़कर, कामयाबी का रास्ता दिखाते हुए स्वर्ग में छोड़कर आते हैं।' स्वर्ग का नाम लेते ही नए मनुष्य का हृदय फिर विचलित हो उठा।

मनुष्य की नकारात्मक सोच कब मानने वाली थी। नकारात्मक लोगों ने जोर से चिलाकर कहा, 'पागल मत बनो, नए मित्र! स्वर्ग किसने देखा है? मनुष्य का भविष्य कौन जानता है? कामयाबी का रास्ता बहुत टेढ़ा है। तुम हमारे ही तट पर आओ।'

इस तरह आज के युग में भी दोनों विचारधाराओं वाले इंसान आपको एक-दूसरे की ओर खींच रहे हैं। दोनों का बल (Force) बराबर होता है। जैसे ही एक का बल (Force) ज्यादा हो जावेगा, मनुष्य उस दृष्टिकोण की तरफ झुक जावेगा। अफसोस आज के युग में यह है कि ज्यादातर मनुष्य नकारात्मक दृष्टिकोण की तरफ ही झुक रहे हैं।

हमारा दृष्टिकोण (नजरिया) इस बात पर निर्भर करता है कि हम जिन्दगी की कामयाबी और नाकामयाबी को किस ढंग से लेते हैं और आगे फैसला करने का क्या आधार है? हमारा नजरिया इस बात को तय करता है कि इस नाकामयाबी को किस तरह लेते हैं? सकारात्मक सोच वाले के लिए नाकामयाबी एक कामयाबी की अगली सीढ़ी हो सकती है जबकि नकारात्मक सोच वालों के लिए रास्ते की बाधा हो सकती है। चाहे आप किसी भी क्षेत्र में काम कर रहे हों, कामयाबी की बुनियाद एक ही है और वह है—आपका दृष्टिकोण, आपका नजरिया। यही वो नजरिया है जो आपको कामयाबी और लक्ष्यप्राप्ति की ओर ले जाता है। जितना बड़ा और ऊँचा पेड़ होगा जड़ें उतनी ही गहरी होंगी और मजबूत होंगी। छोटे पौधे की जड़ें छोटी और कमजोर होती हैं। जिस तरह मजबूत इमारत के लिए मजबूत नीवँ की जरूरत पड़ती है—उसी तरह सफलता के लिए भी एक मजबूत नीवँ की जरूरत है और नीवँ है—आपका दृष्टिकोण और सिर्फ दृष्टिकोण।

निराशा मूर्खता का परिणाम है।

—डिजरायली